उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा की व्यक्तिगत परीक्षा प्रणाली के छात्रों की सामाजिक स्थिति का दो विश्वविद्यालयों के संदर्भ में अध्ययन

डॉ0 अमित कुमार*

किसी भी प्रदेश के सर्वोत्तम विकास के लिए उच्च शिक्षा का विशेष महत्व है। उच्च शिक्षा का विकास वर्तमान में विद्यमान आवश्यकताओं एवं भविष्य की संभावनाओं तथा सामाजिक अपेक्षाओं के आलोक में किया जाना है। वर्तमान में उच्च शिक्षा मात्र सीखने व जानने का उपक्रम अथवा मनुष्य के मानसिक और बौद्धिक धरातल पर होने वाली जानकारियों–सूचनाओं के आदान–प्रदान तक ही सीमित नहीं है, वरन् सुयोग्य सुसंस्कृत एवं उत्कृष्ठ चरित्रधारी प्रबुद्ध पीढ़ियों का निर्माण भी उच्च शिक्षा का प्रमुख दायित्व है। छात्र–छात्राओं में समता, समरसता, सामाजिक सरोकार के विषयों में युवाओं की संलग्नता, धर्मनिरपेक्ष, पर–कल्याण, राष्ट्रनिर्माण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मनुष्यों के उच्चादर्शों के विकास के लिए सुनियोजित उच्च–शिक्षा आवश्यक है।

उत्तर प्रदेश में उच्चशिक्षा

लोक कल्याण के निमित्त प्राथमिकता के आधार पर शैक्षिक रूप से अविकसित तथा पिछड़े क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों की स्थापना की गई है। उत्तर प्रदेश का प्रयास रहा है कि बदलते हुये वैश्विक परिवेश में समाज का संतुलित विकास हो एक उसके विभिन्न अवयवों के मध्य पारस्परिक सामंजस्य की स्थिति को सुनिश्चित करने के लिये शैक्षिक संस्थाओं के गुणात्मक विकास पर बल दिया जाय, ताकि राष्ट्र निर्माण के उच्चतर लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। इन आदर्शो को साकार करने की दिशा में शासन द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि प्रदेश के उच्च शिक्षा के संस्थानों में आधुनिकतम संसाधनों से परिपूर्ण उच्च कोटि की शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध हो साथ ही शासन द्वारा इस बात पर भी विशेष बल दिया जा रहा है कि छात्र–छात्राओं को व्यवसाय–परक शिक्षा प्रदान की जाय जिससे प्रदेश का उच्च शिक्षित युवा वर्ग स्वावलम्बी बन सके, शिक्षित युवाओं की सरकारी सेवाओं पर निर्भरता में उत्तरोत्तर कमी आ सके और देश की समृद्धि एवं उन्नति में वह अपना अमूल्य योगदान दे सके। वर्तमान समय में शासन विशेष सक्रियता के साथ सन्नद्ध होकर सुयोग्य प्राध्यापकों की नियुक्ति, भवन निर्माण/विस्तार, समृद्ध पुस्तकालय, महाविद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार, सुसज्जित प्रयोगशाला तथा महाविद्यालयों के कम्प्यूटरीकरण जैसे कार्यो पर विशेष ध्यान दे रहा है। दूसरी ओर प्राथमिकता के आधार पर, उच्चशिक्षा में निजी पूंजी निवेश एवं सहभागिता को आकृष्ट करने की दिशा में असेवित क्षेत्रों महाविद्यालयों की स्थापना किये जाने के सिद्धान्त को क्रियान्वित किया जा रहा है। उच्चशिक्षा के कार्यो के सम्पादन एवं अनुश्रवण हेतु वर्ष 1980–81 में गोरखपुर, 1984–85 में लखनऊ, वर्ष 1990–91 में कानपुर, 1992'93 में मेरठ एवं 1995–96 मं आगरा, बरेली, झॉसी तथा वाराणसी में उच्च शिक्षा के क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना की गई है।

व्यक्तिगत शिक्षा प्रणाली

उत्तर प्रदेश देश की सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है। प्रतिवर्ष सर्वाधिक संख्या में छात्र स्कूली शिक्षा उत्तीर्ण कर रहे हैं। उत्तीर्ण छात्रों के अनुपात में उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या कम है। जिसके कारण सभी छात्रों का अपने विषय के अनुसार प्रवेश मिलना बहुत ही कठिन है। विश्वविद्यालय तथा कालेजों में संस्थागत रूप से छात्रों के प्रवेश के लिये सीटे बहुत कम मात्रा में हैं चूँकि शिक्षा मौलिक अधिकार है। इसलिये किसी भी व्यक्ति को शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। भारत एक प्रजातांत्रिक देश होने के कारण विकास के अवसर समान रूप से प्रत्येक व्यक्ति को देती है। इसी को ध्यान में रखते हुये जो छात्र संस्थागत रूप से प्रवेश नहीं पाते उनको विकल्प रूप में व्यक्तिगत परीक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करती है।

* **समाजशास्त्र विभाग, दिव्य कृपाल महाविद्यालय, गोसवॉ, मल्लावॉ, हरदोई**

छात्रों के अवसर के साथ–साथ विश्वविद्यालयों की आर्थिक स्थिति सुधारने का भी अवसर प्राप्त होता है। उत्तर प्रदेश में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा व्यक्तिगत परीक्षा करायी जाती है। प्रदेश के अधिकतर विश्वविद्यालयों तथा कालेजों की वित्तीय स्थिति संस्थागत रूप से दयनीय दिखाई जाती है। व्यक्तिगत परीक्षा आयोजन कराने से कुछ हद तक उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार होता है। साथ ही साथ उच्च शिक्षा के लिये समान अवसर प्रदान करते हैं। प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के व्यक्तिगत परीक्षा में शामिल होने के लिये उनके अपने नियम व प्रावधान है।

व्यक्तिगत परीक्षा के उद्देश्य

1. उच्चशिक्षा का लाभ कमजोर वर्गो के छात्रों को भी मिले।
2. उच्चशिक्षा का विकास तीव्रगति से हो।
3. उच्चशिक्षा का विकास ग्रामीण स्तर तक पहुॅचे।
4. उच्चशिक्षा का लाभ उनको भी मिले जो नियमित रूप से प्रवेश पाने से वंचित रहते है।
5. उच्चशिक्षा का लाभ उनको मिले जो नौकरी या व्यवसाय कर रहे है।
6. ऐसे लोगों तक उच्च शिक्षा का प्रसार हो जिनके आवास की दूरी संस्थागत संस्थानों से अधिक है।
7. उच्चशिक्षा का लाभ उन लोगों को भी मिले जो नियमित रूप से अनुत्तीर्ण हो चुके है। जिनका पुनः प्रवेश नहीं हो सकता।
8. विश्वविद्यालयों को भी अवसर मिलता है कि वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सके।

अध्ययन क्षेत्र तथा समग्र

प्रस्तुत शोध–पत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के समग्र व्यक्तिगत उच्च शिक्षा आयोजित कराने वाले विश्वविद्यालय तथा व्यक्तिगत परीक्षा में बैठने वाले सम्पूर्ण विद्यार्थी हैं। उत्तर प्रदेश में कुल 9 विश्वविद्यालय व्यक्तिगत परीक्षा का आयोजन कराते हैं। ये 9 विश्वविद्यालय– छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, डा0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी, महात्मा ज्योतिबाफूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली तथा उनके सम्बद्ध महाविद्यालय हैं।

अध्ययन का निदर्श

अध्ययन के निदर्श के रूप में व्यक्तिगत परीक्षा का आयोजन कराने वाले विश्वविद्यालयों में से दो विश्वविद्यालयों का चुनाव किया गया है। प्रथम वह विश्वविद्यालय है जिसका परिक्षेत्र जनसंख्या अधिक है जिसमें छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय का चुनाव किया गया है। दूसरा वह विश्वविद्यालय है जिसका परिक्षेत्र तथा जनसंख्या सबसे कम है जिसमें बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी का चुनाव किया गया है।

अध्ययन के निदर्श के रूप में दो विश्वविद्यालयों से कुल 905 व्यक्तिगत विद्यार्थियों जो विभिन्न कक्षाओं एवं विभिन्न विषयों से सम्बन्धित हैं को प्रश्नावली वितरित की गई इसमें से कुल 384 उत्तरदाताओं से प्रश्नावलियां प्राप्त हुई।

अध्ययन के उपकरण एवं तथ्यों का संकलन–अध्ययन के उपकरण के रूप में प्रश्नावली अनुसूची का उपयोग किया गया है एवं तथ्यों के संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रश्नावली अनुसूची के माध्यम से किया जायेगा। द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन विश्वविद्यालयों के आंकड़ें, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाएं, सरकारी आंकड़ें एवं समाचार पत्रों के माध्यम से किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा की व्यक्तिगत परीक्षा प्रणाली अपनाने वाले निदर्श में शामिल 384 छात्रों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के विश्लेषण से संबंधित है। छात्रों की सामाजिक स्थिति का उनके लिंग, आयु, वैवाहिक स्तर, वैवाहिक स्थिति, धर्म, जाति, आवास–क्षेत्र, परिवार का स्वरूप, मकान का स्वरूप तथा माता–पिता की शिक्षा के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

सामाजिक स्थिति

तालिका–1 लिंगानुसार छात्रों के वितरण से संबंधित है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में से महिला छात्रों की संख्या 217 व प्रतिशत 56.51 है तथा पुरूष छात्रों की संख्या 167 व प्रतिशत 43.49 है।

तालिका–1
लिंगानुसार छात्रों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	लिंग	संख्या	प्रतिशत
1	पुरूष	167	43.49
2	महिला	217	56.51
कुल		384	100.00

तालिका–2
आयु–वर्ग के अनुसार छात्रों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	आयु वर्ग (वर्षो में)	संख्या	प्रतिशत
1	18 से 20	21	5.47
2	21 से 25	269	70.05
3	26 से 30	68	17.72
4	31 से 35	17	4.42
5	36 से 40	5	1.30
6	41 से 45	2	0.52
7	46 से ऊपर	2	0.52
कुल		384	100.00

तालिका–2 आयु वर्ग के अनुसार छात्रों के वितरण से संबंधित है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में से सर्वाधिक छात्र 25 वर्ष तक की आयु वाले हैं इनकी संख्या 290 व प्रतिशत 75.52 है तथा 17.72 प्रतिशत छात्र 26 से 30 वर्ष तक की उम्र वाले है। 4.42 प्रतिशत छात्र 31 से 35 वर्ष तक की उम्र वाले हैं तथा 36 से 40 वर्ष उम्र वाले छात्रों का प्रतिशत 1.30 है। इसी प्रकार 1.04 प्रतिशत छात्र 40 वर्ष से ऊपर उम्र वाले भी हैं।

अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि लगभग 25 प्रतिशत छात्र 25 वर्ष की आयु के हैं। तथ्य संग्रहण से यह पता चला कि अधिक आयु में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का कारण उनकी पारिवारिक स्थिति है जिससे नियमित या संस्थागत शिक्षा ग्रहण नही कर सके इसके साथ ही नौकरी व व्यवसाय में लगे होने के व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं।

तालिका–2 विश्लेषण से स्पष्ट है कि 21 से 25 आयु वर्ग के स्नातक/परास्नातक के परिक्षार्थियों का प्रतिशत सर्वाधिक है। 18 से 20 वर्ष के आयु वर्ग के परिक्षार्थियों में केवल 8.28 प्रतिशत स्नातक के परिक्षार्थी हैं।

तालिका–3 :
वैवाहिक स्तर के आधार पर परीक्षार्थियों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	वैवाहिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	अविवाहित	258	67.19
2	विवाहित	126	32.81
कुल		384	100.00

तालिका 3 वैवाहिक स्तर के आधार पर छात्रों के वितरण से संबंधित है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में से अविवाहित छात्रों की कुल संख्या 258 व प्रतिशत 67.19 है तथा विवाहित छात्रों की कुल संख्या 126 व प्रतिशत 32.81 है। अतः व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था में विवाहित छात्रों प्रतिनिधित्व कम नही है।

तालिका–4
लिंगानुसार छात्रों का वैवाहिक स्तर

(कुल संख्या–384)

लिंगानुसार वैवाहिक स्तर				
क0सं0	**लिंग**	**वैवाहिक स्तर**		**कुल**
		अविवाहित	**विवाहित**	
1	पुरूष	120 (71.86)	47 (28.14)	167 (100.00)
2	महिला	138 (63.59)	79 (36.41)	217 (100.00)
कुल		258 (67.19)	126 (32.81)	384 (100.00)

➢ *नोट : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत दर्शाते हैं।*

तालिका–4 में लिंगानुसार छात्रों के वैवाहिक स्तर का विश्लेषण किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 167 पुरूष छात्रों में से 71.86 प्रतिशत पुरूष छात्र अविवाहित है तथा 28.14 प्रतिशत पुरूष छात्र विवाहित हैं। कुल 217 महिला छात्रों में से 63.59 प्रतिशत महिलायें अविवाहित है तथा 36.41 प्रतिशत महिलायें विवाहित हैं।

अतः तालिका विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था के छात्रों में पुरूष छात्रों की अपेक्षा महिलायें अधिक संख्या में विवाहित हैं। जबकि उत्तर प्रदेश में कुल जनसंख्या का 43.84 प्रतिशत महिलाएँ विवाहित हैं।

तालिका–5
धर्म के आधार पर छात्रों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	**धर्म**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	हिन्दू	344	89.58
2	मुस्लिम	31	8.07
3	ईसाई	2	0.52
4	अन्य	7	1.82
कुल		384	100.00

तालिका–5 में छात्रों के धर्म वितरण से सबंधित विश्लेषण किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में से सर्वाधिक छात्र हिन्दू धर्म को मानने वाले है इनकी संख्या 344 व प्रतिशत 89. 58 है तथा मुस्लिम धर्म के मानने वाले छात्रों की संख्या 31 व प्रतिशत 8.07 है। अन्य धर्मो के मानने वाले छात्रों की संख्या 7 व प्रतिशत 1.82 हैं तथा ईसाई धर्म के मानने वाले छात्रों की संख्या 2 व प्रतिशत 0.52 है।

अतः तालिका विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्रों में हिन्दू धर्म के मानने वालों की संख्या सर्वाधिक है जबकि अन्य धर्मो के मानने वाले छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत काफी कम है। जैसा कि तालिका 4.7 उत्तर प्रदेश में धर्म के अनुसार जनसंख्या के वितरण से स्पष्ट है

कि उत्तर प्रदेश में मुस्लिम धर्म कुल जनसंख्या के अनुपात में व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था के छात्रों में प्रतिनिधित्व कम है।

तालिका–6

उत्तर प्रदेश में धर्मानुसार जनसंख्या का वितरण

क्षेत्र	हिन्दू	मुस्लिम	ईसाई	अन्य	कुल
ग्रामीण	84.53	15.03	0.07	0.27	100.00
नगरीय	66.73	32.03	0.57	0.67	100.00
कुल	80.90	18.49	0.17	0.43	100.00

स्रोत : आय–व्ययक रूपरेखा, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन विभाग उत्तर प्रदेश 2013–14

तालिका–7

जाति श्रेणी के आधार पर छात्रों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	जाति श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य	165	42.97
2	ओ0बी0सी0	135	35.16
3	एस0सी0	81	21.09
4	एस0टी0	3	0.78
कुल		384	100.00

तालिका–7 में जाति श्रेणी के अनुसार छात्रों के वितरण का विश्लेषण किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में से सर्वाधिक छात्र सामान्य श्रेणी के हैं इनकी संख्या 165 व प्रतिशत 42.97 है तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या 135 व प्रतिशत 35.16 है। अनुसूचित जाति के कुल छात्रों की संख्या 81 व प्रतिशत 21.09 है तथा सबसे कम अनुसूचित जनजाति के छात्र है इनकी संख्या 3 व प्रतिशत 0.78 है।

तालिका–8

उत्तर प्रदेश में जाति वर्ग के आधार पर जनसंख्या का वितरण

क्षेत्र	अनुसूचित जनजाति	अनुसूचित जाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	सामान्य वर्ग
ग्रामीण	1.81	26.43	53.53	18.23
नगरीय	0.94	13.90	48.96	36.21
कुल	1.63	23.88	52.60	21.89

स्रोत : आय–व्ययक रूपरेखा, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन विभाग उत्तर प्रदेश 2013–14।

अतः तालिका–8 से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था में सर्वाधिक छात्र सामान्य वर्ग के हैं जबकि तालिका 4.9 से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक जनसंख्या अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों की है।

तालिका–9

आवास–क्षेत्र के आधार पर छात्रों का वितरण

(कुल संख्या–384)

क0सं0	आवास–क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण	181	47.10
2.	शहरी	150	39.10
3.	कस्बा	52	13.50
4.	कोई जवाब नहीं	1	0.30
कुल		384	100.00

तालिका–9 आवास क्षेत्र के अनुसार छात्रों के वितरण से संबंधित है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 व्यक्तिगत छात्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सर्वाधिक है इनकी संख्या 181 व प्रतिशत 47.10 है तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले छात्रों की संख्या 150 व प्रतिशत 39.10 है। कस्बाई क्षेत्रों में निवास करने वाले छात्रों का प्रतिशत 13.50 व संख्या 52 है।

अतः तालिका विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत परीक्षा में सम्मिलित होने वाले सर्वाधिक छात्र ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले है। जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थान काफी दूरी पर होते हैं जिसके कारण ग्रामीण छात्र व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था के माध्यम से अपनी शैक्षिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं।

तालिका–9 में परिवार के स्वरूप के आधार पर छात्रों के वितरण से संबधित विश्लेषण किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 384 छात्रों में सर्वाधिक 257 छात्र संयुक्त परिवारों में रहतें है व इनका प्रतिशत 67.00 है तथा एकाकी परिवार में रहने वाले छात्रों की संख्या 123 व प्रतिशत 32.00 है।

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत छात्रों की सामाजिक स्थिति कमजोर स्तर की है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन में शामिल कुल छात्रों में महिलाओं का प्रतिशत (56.51) पुरूष छात्रों से अधिक है। आयु के अनुसार सर्वाधिक छात्र (70 प्रतिशत) 21 से 25 वर्ष की उम्र के हैं। इसी प्रकार से अन्य सामाजिक स्तरों पर छात्रों का सामाजिक स्तर पिछड़ा हुआ है। साथ ही यह भी निष्कर्ष निकलता है कि कमजोर सामाजिक पृष्ठभूमि होने के कारण ही उत्तर प्रदेश के बहुतायत छात्रों द्वारा व्यक्तिगत शिक्षा प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उच्चशिक्षा विभाग, कार्यपूर्ति दिग्दर्शिका उत्तर प्रदेश, 2010–2011.
2. विपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, NCERT New Delhi
3. किरन कम्पटीशन टाइम्स, 1049 शिवनगर, इलाहाबाद–6
4. जनसंख्या एवं नगरीकरण : इलाहाबाद पब्लिर्स इलाहाबाद, पेज–10.
5. भारत–2010, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, सूचना भवन, नई दिल्ली, पेज 276–277.
6. National Policy on Education 1986, as modified in 1992, Government of India Department of Education Ministry of HRD, New Delhi, 1986.
7. Internet online Wikepedia.
8. चौबे, एस0पी0 : स्वदेश विदेश में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पेज–338–339.
9. उच्चशिक्षा विभाग, कार्यपूर्ति दिग्दर्शिका उत्तर प्रदेश, 2010–2011,
10. उच्चशिक्षा विभाग, कार्यपूर्ति दिग्दर्शिका उत्तर प्रदेश, 2010–2011.
11. www.kanpuruniversity.org
12. www.vbspu.ac.in
13. www.bujhansi.org
14. www.rmlau.ac.in
15. www.mgkvp.ac.in
16. www.ccsuniversity.ac.in
17. www.mjpru.ac.in
18. www.dbrau.ac.in
19. www.ddugu.edu.in